Total Pages : 8

1601

I Year Arts Examination, 2017

RAJASTHANI SAHITYA

Paper–I

(आधुनिक गद्य)

Time : Three Hours
Maximum Marks : 100

PART - A (खण्ड-अ) [Marks : 20

Answer all questions (50 words each).
All questions carry equal marks.
सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर पचास शब्दों से अधिक न हो।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART - B (खण्ड-ब) [Marks : 50

Answer *five* questions (250 words each).
Selecting *one* from each unit. All questions carry equal marks.
प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए।
प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART - C (खण्ड-स) [Marks : 30

Answer any *two* questions (300 words each).
All questions carry equal marks.
कोई दो प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-अ

इकाई-I

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(अ) ''म्हे धाड़ैत हां धन माल सारौ दियां पिंड छूटसी। लुकाव छिपाव करसी तौ जान सूं मारयौ जासी।'' कथन में धाड़ैत का क्या अभिप्राय है?

(ब) ''बखतावर जी'' का परिचय लिखिए।

इकाई-II

(स) ''हाड़ी रानी'' का परिचय लिखिए।

(द) ''अमरो चारण'' कौन था?

इकाई-III

(य) ''सूरज री मौत'' कहानी का मूल कथ्य लिखिए।

(र) ''हिरणी'' का परिचय लिखिए।

इकाई-IV

(ल) ''भारमली'' की व्यथा क्या थी?

(व) ''नीलकण्ठी'' का कथ्य लिखिए।

इकाई-V

(श) ''पुण्याई'' कहानी में सरपंच का क्या नाम था?

(ष) ''सांठ'' कहानी के कहानीकार एवं मुख्य पात्र का नाम लिखिए।

खण्ड-ब

इकाई-I

2. ''वीरमती'' एकांकी के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

3. ''मिनखपणौ'' एकांकी का मूल मन्तव्य क्या है? लिखिए।

इकाई-II

4. ''भारमळी भाजी कोनी'' कहानी के कथ्य पर प्रकाश डालिये।

5. ''थे बारै जावो'' कहानी का मूल्यांकन प्रस्तुत कीजिए।

इकाई-III

6. ''काँच रो चिळको'' कहानी के पात्रों का परिचय दीजिए।

7. ''कांचळी'' कहानी के कथानक को स्पष्ट कीजिए।

इकाई-IV

8. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

''आधी मत भिष्ट हुयी रजपूतां! राव दुर्गादासजी और अनमी रांणै परताप रौ उत्तम छत्री कुळ इण तरै सूं माथै में धूड़ घाळसी, अेड़ी आसा नीं ही। धरती तौ मोटा-मोटा राजवियां सूं छूटी, पण वां देस में धाड़ा, डकैती, चोरी करनै माजणौ नीं डूबोयौ। मेवाड़ौ राणौ चित्तौड़ सूं छूटयौ, बरसां ताई जंगळा में भूखौ तियासो भटक्यौ पण आपरै सतधरम सूं डिग्यौ तौ नहीं? दुर्गादास जी सूं मारवाड़ छूटी, पण धाड़ा तौ नहीं मार्‌या। धन्न है उणां रै माता-पिता नै रजपूती नांव रा लाजणहारां। थानै लाज कोणी आवै।''

9. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

''हां म्हूं। अचम्भा री कांई वात है। धारै ईंज धराणी में कतरी हुकराणियाँ लड़ाई में झूंझी है के नीं? थां कस्यां जांणो कोयनी? म्हूं कोई अणूती बात कर री हूं के? पत्ताजी री मां अर वांरी ठुकराणी अकबर सूं लड़ता-लड़ता मर्‌यूया

कै नी? म्हूं ही वारा हीज धराणा में आई हूं? म्हूँ क्यूं नीं जाऊं? जमीत सजगी। नगारा पै कूंच रो डंको पड़्यो। निसाण री फर्रियां खोल दीधी। पाखर घल्यो घोड़ो आय ऊभी व्हीयो। माथै टोप, जिरह बख्तर रा काळा लोह सूं ठंक्या हाथ बेटा री कंवळी-कंवळी बांहां ने पकड़ गोद में उठावा ने आगै व्हींया। टाबर सहभग्यो। बोली तो मां सरीखी अर यो अजब भेख रो आदमी कुण।''

इकाई-V

10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

''काले असीज नेह री वातां अमरत सूं मीठी लाग री पण अबारूं बळबळता खीरा ज्यूं लागी। जसवन्तसिंधजी री हाड़ी रानी री। वां भाग-भाग आया पति ने किला में कोनी घुसण दीथा। किला रा दरवाजा बन्द कर दिथा-बोली-''भाग्योड़ा पति रो मूंडो कोनी देखूँ।'' हाडीजी री सांस जोर सूं चाळण लागी, रगत में उबाळो आयग्यो।-''म्हांरी चिन्ता मत करो। तरवार हाथ में पकड़ो। जीतरं आया तो अठै आणंद करांळा, मरग्या तो सुरग में म्हूं ही लारै ररी लारै आवूं।'' हाड़ीजी रो आवेग सूं मूंडो रातो व्हैग्यो-''कायर पति ने बाथ में घाळ नै घर में घाल्यां राखवा सूं तो बीर पति री रांड़ व्है जाणो लाख दांण चोखो।''

11. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

''मिणख रैं चा'या के ह्वै है? ईसर री हजारां आख्या आपणै चौखै कीजै काम ने देखे है। मिणख भूंडौ कर'र सुखरी नीन्द नी पावै। जो पाप उण कियो करायो है, वे उण री आतमा री सागळी आवाज ऊपर सवार होय'र बोलै। पचार नीं राख सकै कोभी आपरै पाप नै। थारै धणी री जीण दुष्ट हित्या कीदी है, वीनै अेक दिन कानून रै सामै समरयण करणौ ईज पडेला। फेरूं लीली छतरी वाळौ कैनैईज माफी नीं देवे।..... रो मत भैण! थारो दरद ई थारी बेटी मांयें जोस भरियो है, हिम्मत बख्सी है। देखै कौनीं, कै वा रात गिणै ना दिन, तेली रै बळद ज्यूं मैनत में जुटी रैवै। बीं रै ईज खून-पसीनां सूं थारो खेत हर बरस मोत्यां जेड़ा दाणां सूं लड़ा-लूम लूमैं, माथे ताई सिहां सूं झमै। थ्यावस राख/हिम्मत नै मती तोड़।''

खण्ड-स

इकाई-I

12. ''डाक्टर रो ब्याव'' एकांकी का एकांकी तत्त्वों के आधार पर मूल्यांकन कीजिये।

इकाई-II

13. ''लालां मेवाड़ी'' कहानी तत्त्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए।

इकाई-III

14. ''जसमल ओडण'' के कथानक की समीक्षा कीजिए।

इकाई-IV

15. ''बदळौ'' एकांकी का एकांकी तत्त्वों के आधार पर विवेचन कीजिए।

इकाई-V

16. निम्नलिखित गद्यांश का राजस्थानी में अनुवाद कीजिए :

व्यक्ति एक बीच होता है। पेड़ उसका परिवार होता है, फल उसकी कमाई होते हैं। जब बीच स्वयं की चिन्ता में लग जाएगा, क्या वह कभी जमीन में दब जाने को तैयार होगा? क्या यह कभी पेड़ बन पायेगी? उसकी स्थिति उस माँ की तरह होगी, जिसने बच्चा तो पैदा कर दिया किन्तु माँ बनने का अहसास नहीं कर पाई। इसके लिए तो उसे मौत के मुंह से गुजरना पड़ता है, केवल पेट चीरकर सन्तान दे देना माँ बन जाना नहीं है।

हम कहते हैं-''मातृ देवो भवः, पितृ देवा भवः।'' क्यों कहते हैं? क्यों मैं कहता हूँ-''अहम् ब्रह्माणि। मैं स्वयं अपनी दृढ़ शक्ति स्वरूपा-नारी जिसे पत्नी कहता हूँख नहीं पहचानता। हमने तो पुरुष को अहंकार का पुतला ही देखा है। शायद पत्नी की शक्ति को नहीं देखा जो शक्ति-स्वरूपा है। आज नारी का अपनी सम्पदा मान बैठे हैं। अर्द्धनारीनरेश्वर की भूमिका को समझता ही नहीं है। इस देश की हर स्त्री अपने पति के निर्माण के लिए जीती है। इसी संकल्प के कारण वह सब कुछ छोड़कर एक सूत्रीय कार्यक्रम के साथ पति के साथ रहने आती है। पति के अहंकार को तोड़ती है। अपने शक्ति रूप के कारण पति की एक मूर्ति का निर्माण करती है, उसके सारे दोष एवं अनावश्यक वातावरण को हटाती है। उसके कर्त्ता-भाव को आस्था से जोड़ती है। इसके बिना कोई भी पति सहाता से पशु बन जाएगा। ये कुदरत का नियम है कि पुरुष कुछ नहीं करता, क्रिया सारी प्रकृति की होती है।''